श्रीरामदुतं शरणं प्रपद्ये

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।

भावार्थ:-अतुल बल के धाम, सोने के पर्वत के समान कांतियुक्त शरीर वाले, दैत्यरूपी वन के लिए अग्नि रूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, संपूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी, श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त पवनपुत्र श्री हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूं।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

अर्थ: हे मनोहर, वायुवेग से चलने वाले, इन्द्रियों को वश में करने वाले, बुद्धिमानो में सर्वश्रेष्ठ। हे वायु पुत्र, हे वानर सेनापति, श्री रामदूत हम सभी आपके शरणागत है॥

स एव शिवरुपेण शं तनोति चतुर्मुख।
अनन्योपसनं लोके सात्विको प्रतिपादयन्।।
श्रीविष्णुः पद वरो विष्णुरुप धरोऽव्ययः।
चतुर्भुज महोत्साहो महादेवो महेश्वरः।।

बृहद् ब्रह्मा संहिता ३.१.१०६-१०७

Inshort:-

विश्व का कल्याण हेतु बजरंगबली ही शिव रुप धारण करते हैं, वे ही चतुर्मुख ब्रह्मा तथा सात्विक गुण से ही वे ही अविनाशी चतुर्भुज विष्णु का रुप धारण करते हैं।

For the welfare of the world, only Bajrangbali takes the form of Shiva, he only takes the form of four-faced Brahma and with sattvic qualities, he only takes the form of imperishable four-armed Vishnu.

माता हनूमांश्च पिता हनूमान् भ्राता हनूमान् भगिनी हनूमान् ।

विद्या हनूमान् द्रविणं हनूमान् स्वामी हनूमान् सकलं हनूमान् ॥

इतो हनूमान् परतो हनूमान् यतो यतो यामि ततो हनूमान् ।

हनूमतोऽन्यं ननु नास्ति किञ्चित् ततो हनूमान् तमहं प्रपद्ये ॥

Mother and father is hanuman. Brother and friend is hanuman. Knowledge and wealth is hanuman. My Lord and my everything is hanuman. Hanuman in this world hanuman in the other. Wherever I go, there is hanuman. Hanuman is the only Lord,there is none other, So, I seek refuge in you Hanuman

ये जपन्ति सदा स्नेहान्नाम मांगल्य कारणम्

श्रीमतो रामचंद्रस्य क्रिपालोर्मम स्वामिनः।

तेषामर्थ सदा विप्रः प्रदताहम प्रयत्नतः

ददामि वांछित नित्यं सर्वदा सौख्यमुत्तमम।।

Hanuman samhita

भावार्थ :- श्री हनुमान जी कहते हैं - - -

जो मनुष्य मेरे स्वामी करुणावतार दयामूर्ति श्रीरामचन्द्रजी के सर्वविध मंगलकारी दिव्य नाम का सदा प्रेमपूर्वक जप करते हैं, उनके लिए मैं दाता बनकर यत्नपूर्वक उन्हें सब कुछ प्रदान कर देता हूं, उनके सभी कामनाओं को पूरा करते हुए नित नए सुख प्रदान करता हूँ!

Meaning :- Shri Hanuman ji says - - - Those people who always lovingly chant the all-auspicious divine name of my Lord Karunavatar Dayamurti Shri Ramchandraji, for them, as a giver, I diligently provide them everything, fulfill all their wishes and give them new happiness everyday!

जानामि त्वां कपितनो साक्षाद् देवं महेश्वरं।३३ख
रावणस्य वधार्थाय ह्यस्वतंत्र रघुत्तमे।।३४क

Brihaddharma puran

Goddess Chandika said :- O Hanuman! I have come to know that you are Mahadev Shiva himself. You have become a vanar to kill Ravana.

हनुमान जी का विराट स्वरूप दर्शन

इत्युक्तः से तया वीरः कामरुपोऽनीलात्मजः।
बुभव भीषणाकारो व्यावृताक्षो महामुखः।।
ददर्श तस्य काये सा शरीराणि च रक्षसाम्।
नखदन्ताग्रलाग्रानि कोटिशः कोटिलक्षशः।।
तथाकारान्महाभीमान्लोमसिन्धुषु वानरान्।
शीर्षे तस्य धनुष्पाणिं नवदुर्व्वादल प्रभम्।।

महाबलं महासत्वं रामं कमललोचनं।
रावणस्येषुलग्नस्य हरन्तं किल जीवितम्।।
कुम्भकर्णं चापमुष्टौ दधतं वामपाणिना।
हनुमतो ललाटे च मा ददर्शं च लक्षमणं।।
जाज्वल्यमानं तिलकं रोचनाया इवातुलम्।
चापमुष्टौ चरणाग्रेऽतिकायेन्द्रजितौ सखि।।
लक्ष्मणस्य किरीटे च ददर्श जनकात्मजाम्।
पश्यन्तीं रामचरणौ रावणेन निरीक्षिताम्।।
भ्रुवोमध्ये पुरीं लंकां जवलन्तीं राक्षसैः सह।
ततो ददर्श कीशस्य हृदये तु विभीषणम्।।
मुर्तिमन्तं भ्राजमानं धर्म्मं लंकाधिपं सखि।
एवं तस्य तथांगेषु ददर्श सकल शिवा।।

बृहद्धर्म पुराण 1.20.28-32

चण्डी का वचन सुनकर इच्छा अनूरउप वेश धारण करने वाले वीर बजरंगबली जी भीषणाकृती हो गए। नयन मानो बाहर ही निकल आएंगे, हनुमान जी का इतना विशालकाय

रुप।मुखमंडल इतना विशाल था।चण्डिका ने देखा कि हनुमान के दांतों तथा नखों मे छिदे अनगिनत राक्षस लटक रहे हैं। उनकी रोमसन्धियों में भीमाकृति लक्ष कोटि वानर विराजित हैं। मस्तक पर स्थित है महास्त्व, नवदुर्व्वादल के समान श्यामल महाबली, कमललोचन श्रीराम जो रावण को बाणों से भेदकर उसका वध कर रहे हैं तथा अपने धाम हाथ की धनुष वाले मुठी में कुम्भकर्ण को पकड़े हैं।चण्डीका ने देखा कि हनुमान के ललाट में गोरोचन तिलक के समान जाज्वल्यवान लक्ष्मण जी स्थित है। हे सखी! रणभुमि में अतिकाय मेघनाद को उन्होंने मुठी में पकड़ लिया है।चण्डिका देखती है कि ललाटस्थ किरीट में स्थित लक्ष्मण की दृष्टि जानकी जी तथा श्रीराम के युगल चरण पर स्थित है। उन्होंने हनुमान जी के भ्रुमध्य में देखा कि लंका नगरी राक्षसों के साथ जल रही है तथा धर्म के स्वरुप विभीषण जी लंकापति होकर हनुमान के हृदय को जगमगा रहे हैं। इस प्रकार चण्डिका ने हनुमान जी के अंगों का सर्वस्व देखा।

ततश्च समये तस्माद्धनूमानिति नामभाक्र।

शम्भुर्जज्ञे कपितनुर्महाबल पराक्रमः॥७॥

The intelligent monkey born of a part of Śiva became Sugrīva’s minister and did everything beneficial to him in every respect.

-Śatarudra-saṃhitā, Śivapurāṇa

मत् स्वामी हृदये नित्यं ध्येयोवैयोगिभिर्मुहुः।
यंदेवाः सासुराः सर्वेनमंतिमणिमौलिभिः॥
रामः श्रीमानयोध्यायाः पतिर्लोकेश पूजितः।

– श्रीपद्म महापुराण (५/३३/४५-४६)

श्री हनुमान जी महाराज कहते हैं – 'योगीजन अपने हृदय में नित्य निरन्तर जिनका ध्यान किया करते हैं, देवता और असुर भी अपना मुकुटमण्डित मस्तक झुकाकर जिनके चरणो में प्रणाम करते हैं। तथा बड़े-बड़े लोकेश्वर जिनकी पूजा करते हैं, वे अयोध्या के अधिनायक भगवान् श्रीरामचन्द्र जी मेरे स्वामी हैं।

यो रामं संस्मरेन्नित्यं भक्त्या मनुपरायणः ।
तस्याहमिष्टसंसिद्ध्यै दीक्षितोऽस्मि मुनिश्वराः ॥

वाञ्छितार्थं प्रदास्यामि भक्तानां राघवस्य तु सर्वथा जागरूकोऽस्मि रामकार्यधुरंधरः ॥

Lord Hanuman said— I have taken initiation (Mantra Diksha from Sita Ji) and I will fulfill the desires of those who engage in chanting mantras with daily devotion and remember Lord Rāma. I will surely grant the desired objects to the devotees of Śrī Raghunāth ji.

(Atharvaveda Ram Rahasya Upaniṣad 4/10-13)

सीतारामपदाम्बुजे मधुपवद्यन्मानसं लीयते
सीतारामगुणावली निशि दिवा यज्जिह्वया पीयते ।
सीतारामविचित्ररूपमनिशं यच्चक्षुषोर्भूषणं
सीतारामसुनामधामनिरतं तं सद्गुरुं तं भजे ॥

राम रसायन

I worship that true spiritual master Hanuman ji whose mind always merges at the lotus feet of Sita Rama, flowing like honey, whose tongue always drinks the

virtues of SītāRāma day and night, whose eyes always see the wonderful beauty of SitaRama and who is always engaged in the abode name of Sītārāma, the well-known abode.

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ।
पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः सौम्ये सागरतारकः ॥ ८॥

यद्रूपं भीषणं दृष्ट्वा पलायन्ते भयानकाः ।
स सर्वरूपः सर्वज्ञः सृष्टिस्थितिकरोऽवतु ॥ २४॥

स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः साक्षाद्देवो महेश्वरः ।
सूर्यमण्डलगः श्रीदः पातु कालत्रयेऽपि माम् ॥ २५॥

Narad puran

May Hanuman, the son of the Wind, protect me from the east and from the south.

May Akshaghna, the gentle star of the ocean, protect the west. 8 ||Seeing the terrible form of the Lord the terrible ones fleeMay that omniscient omniscient form of creation and maintenance protect me Hanuman ji is Brahmā, Vishnu and Lord Maheśvara,Himself.May the that god, who bestows all opulences in the orbit of the sun, protect me in all three periods of time.

ॐ नमो वायुपुत्राय पञ्चवक्त्राय ते नमः ।
नमोऽस्तु दीर्घबालाय राक्षसान्तकराय च ॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय शिवरूपाय ते नमः ।
नमो विष्णुस्वरूपाय सूर्यरूपाय ते नमः ॥

Parashar Samhita

Obeisances to the five-faced son of the air.Obeisances unto You, who have a long hair and who destroy the Rākṣasas.Obeisances to You, who are in the form of

Brahmā and who are in the form of Lord Śiva.Obeisances to You, who are the form of Lord Viṣṇu and who are the sun-god.

हनुमान् स महादेवः कालकालः सदाशिवः ।
इहैव भुक्तिकैवल्यमुक्तिदः सर्वकामदः ॥

चिद्रूपी च जगद्रूपस्तथारूपविराडभूत् ।
रावणस्य वधार्थाय रामस्य च हिताय च ॥

अञ्जनीगर्भसम्भूतो वायुरूपी सनातनः ।
यस्य स्मरणमात्रेण सर्वविघ्नं विनश्यति ॥

Rudrayamal tantra

Hanuman is the great god of time and Sadashiva himself.

In this very world he bestows enjoyment, liberation and liberation and fulfills all desires.

He became the form of the universe in the form of consciousness and the form of the Supreme Personality of Godhead incarnated To kill Ravana and for the welfare of Rama

He is eternal in the form of air, born from the womb of Anjani.All obstacles are vanquished by mere remembrance of the Supreme Personality of Godhead.

ॐ हनुमानञ्जनासूनुर्वायुपुत्रो महाबलः ।
केसरीनन्दनः श्रीमान्विश्वकर्माऽर्चितध्वजः ॥

ब्रह्मात्मा ब्रह्मकृद्ब्रह्म ब्रह्मलोकप्रकाङ्क्षणः ।
श्रीकण्ठः शङ्करः स्थाणुः परंधाम परा गतिः ॥

पीताम्बरधरश्चक्री व्योमकेशः सदाशिवः ।
त्रिमूर्त्यात्मा त्रिलोकेशस्त्रिगणस्त्रिदिवेश्वरः ॥

वासुदेवः परंव्योम परत्वं च परोदयः ।
परं ज्ञानं परानन्दः परोऽव्यक्तः परात्परः ॥

Sudarshan samhita

ॐ Hanuman, the son of Anjana, the son of the air, is very strong.He is the delight of Kesari and has a banner worshiped by Viśvakarmā.He is the Brahman, the Brahman, the Brahman-creator, the Brahman-world, and the Brahman-world.

Bajrangbali is Śrīkantha Vishnu, Lord Śaṅkara, Sthaṇu, the Supreme Abode and the ultimate destination.Hanuman is dressed in yellow and has a wheel and sky-haired Lord Sadaśiva himself.Hanuman is the Supreme Soul of the three worlds and the Lord of the three heavenly bodies, Vāsudeva, supreme sky, and the supreme being ,The Supreme Knowledge, Supreme Bliss, the Supreme Unmanifest, the Supreme Being.

हनुमानञ्जनासूनुर्धीमान् केसरिनन्दनः ।
वातात्मजो वरगुणो वानरेन्द्रो विरोचनः ॥

रामनामलसद्वक्तो रामायणकथादृतः ।
रामस्वरूपविलसन्मानसो रामवल्लभः ॥

Ram rahasya

Hanuman, the son of Anjana, is the wise delight of Kesari. The son of Air, Virocana the king of monkeys and possessed excellent qualities. He spoke the name of Rama in a pure manner and revered the story of the Ramayana.His mind was delighted with the form of Rama and he was dear to Rama

©
RAJESH
NAGULAKONDA
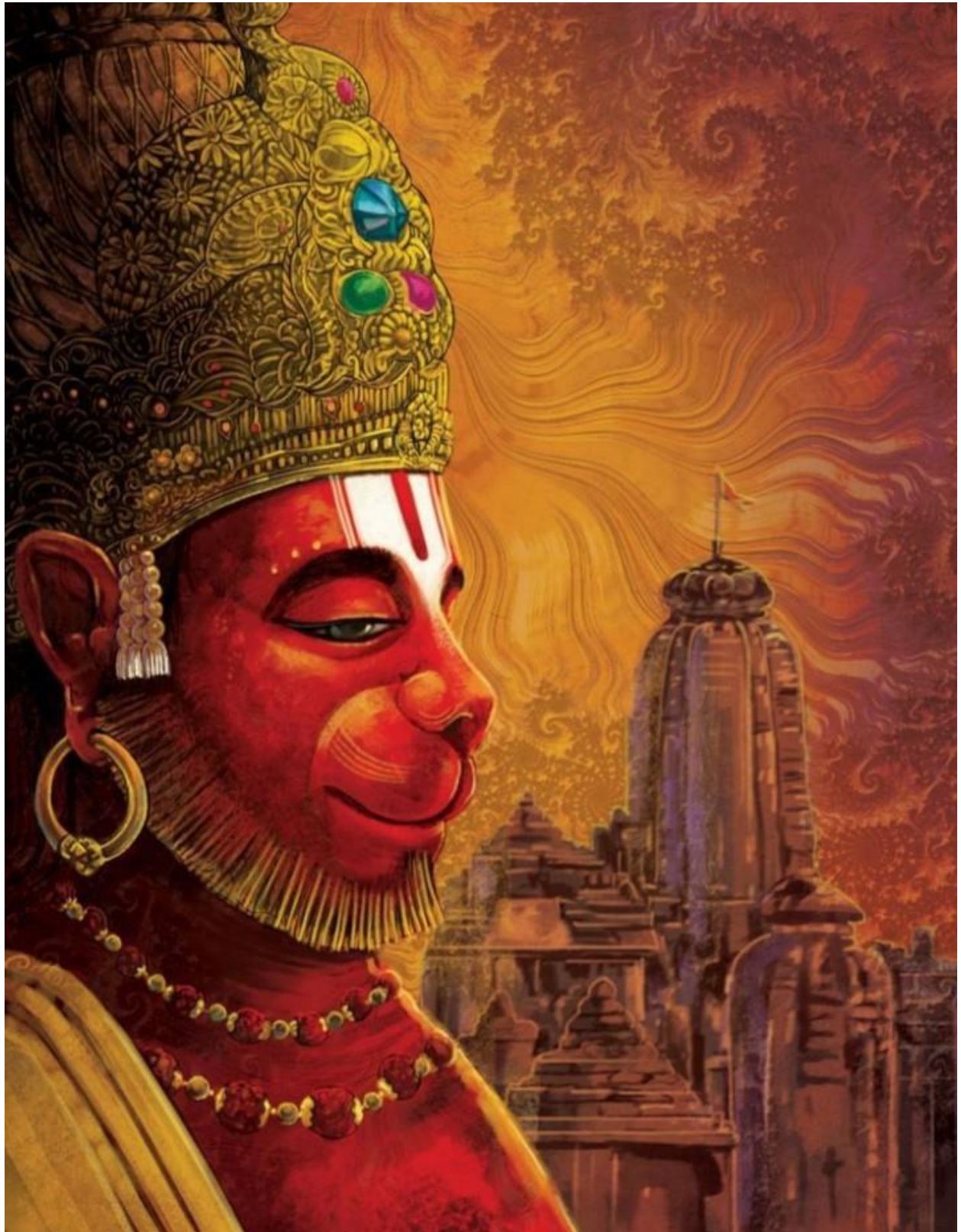
హిందువని గర్వించు హిందువుగా జీవించు
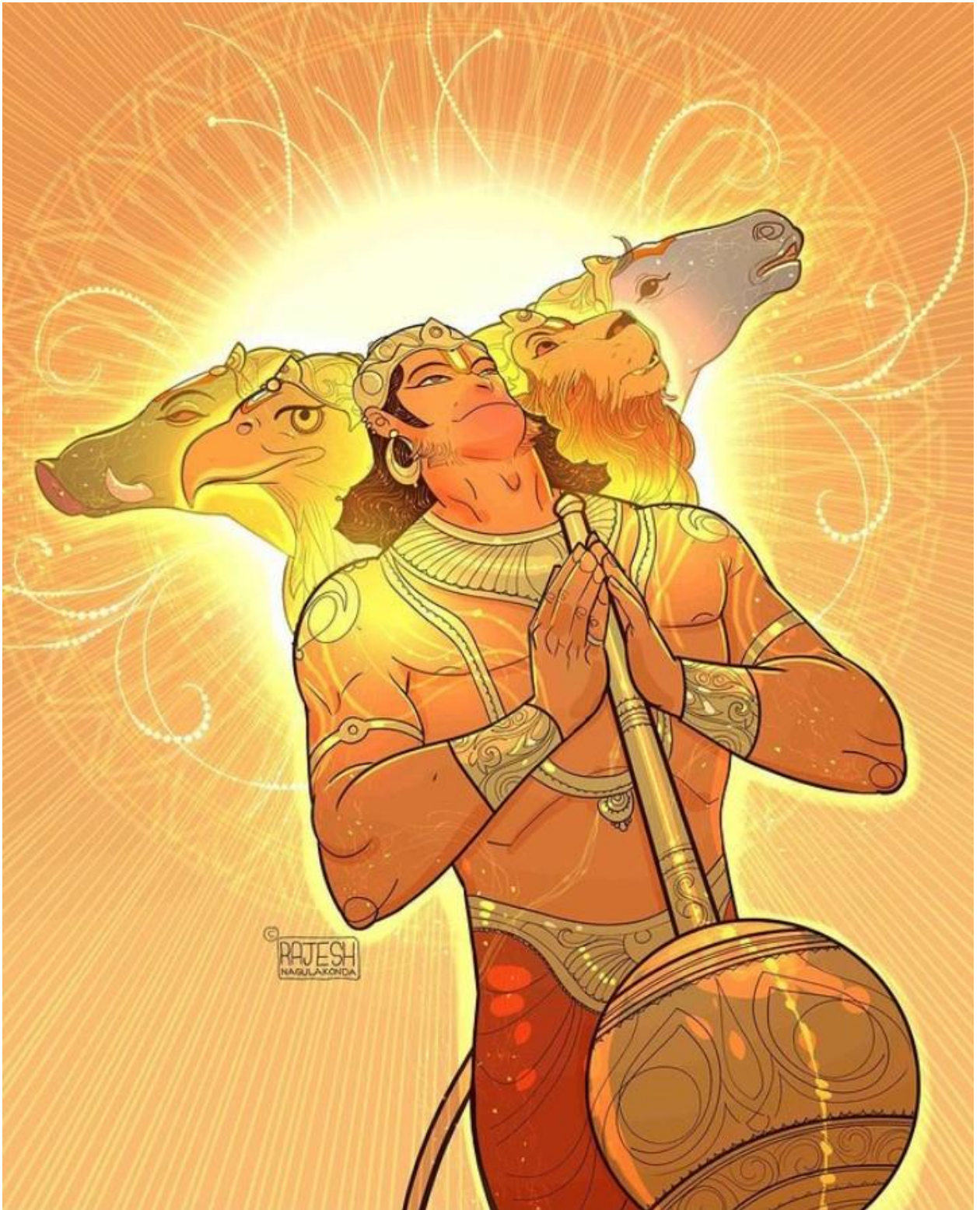
तथा किमपुरुषोऽयं वै हनुमान नामतो बली।
महाशम्भुरिति विख्यातो रामरुपम् आश्रितः।।

बृहद्ब्रह्मा संहिता

ये किमपुरुष महाबली हनुमान जो है, स्वयं महाशंभु नाम से जाने जाते हैं, श्री राम का आश्रय ग्रहण करते हैं।